॥ प्रेरणा स्रोत ॥

एकता का सूत्र

एकता का सूत्र

इस समय (विश्वगुरु) भारत के पास कोई सर्वमान्य शास्त्र नहीं है, भारत शास्त्रविहीन है। आवश्यकता है ऐसे शास्त्र कीजोहमेंनिश्चितदिशादे।वस्तुतः हमारा धर्मशास्त्रकौन है?समाजमेंबहुचर्चितस्मृतियाँ(जैसे- पाराशर, मनु, याज्ञवल्क्य इत्यादिसौथीं,इनमें सेभी लगभग बीसस्मृतियाँ)हर स्टेट(रियासतों)मेंसमय-समय पर कानून बनीं। उनके अनुसार ही समाज का प्रशासन चलाया जाताथा।हरस्टेटमेंऔसतनपचास हजार नागरिकों में से पचासों हजार को अशिक्षित रखकर इन विधियोंको चलाया गया था।क्योंकियदि प्रजा शिक्षित हो जाती तो विचार करने लग जाती, प्रश्न उठ खड़े होते। स्मृतियों की अधिकांश व्यवस्थायें घृणित थीं। उनकेपढ़नेपरकठोरप्रतिबन्धथे।लिखा है कि यह पुस्तक किसी को दिखाना मत! उन्हें ही दिखाओजोगर्भाधानसेचितातककेमन्त्रजानतेहों, कर्मकाण्ड कराते हों। उनकी जाँच करो, परीक्षा लो और फिर दिखाओ। शास्त्र हमारा और हम देख नहीं सकतेकिशास्त्रमेंक्यालिखाहै?

राजनीतिकपरतन्त्रतासेमुक्तहोतेहीभारतमें शिक्षा व्यापककरूपसेमिलनेलगी,लोग समझनेलगे। यही कारण है कि अब भारत का कोई भी विद्वान् अथवा धर्माचार्यस्मृतियोंकोधर्मशास्त्रकहनेकासाहस नहींकरता।इसीप्रकार लगभग दो हजारवर्षोंसे

भारत शास्त्रविहीन देश है। विश्व के धरातल परलगभगसाठकरोड़जनताऐसीहै,जिनके पास कोई शास्त्र नहीं है। सर्वमान्य कोई एक पुस्तक नहीं, एक स्वर से अनुमोदित ऐसे नियम नहीं जिनसे वह अनुबन्धित हो सके। यह कहना आसान है कि हिन्दुओंकाशास्त्र वेद है यासांख्य,न्याय,वैशेषिक, मीमांसा आदि छः शास्त्र हैं किन्तु जन-साधारण ने इन्हेंदेखातकनहीं,उनकेकण्ठकेनीचेकभीउतरा नहींऔरनकभी उतारनेकाप्रयासही किया गया। इसलिए आवश्यकता है धर्माचार्यों से पूछने की कि अब शास्त्र क्या है, स्मृतियाँ तो रही नहीं? कदाचित् हीकोईबतापायेगा।

जब शास्त्र देखनेकोमिलाहीनहीं,मिलेगाभी नहीं, क्योंकि अधिकारीनहींहैतो समाज महात्माओं के पीछे संगठित होने लगा। भगवान् महावीर केपीछेलगातो

जैन, भगवान् बुद्ध की शरण में गया तो बौद्धिस्ट, कबीर केपीछे लगा तो कबीरपंथी, नानक के पीछे लगा तो नानकपंथी, दयानन्द के पीछे संगठित समाज आर्य-समाजी, ज्ञानेश्वर के पीछे संगठित समाज वारकरी पंथ। जो जिसके पीछे लग गया वही समाज। मत-मतान्तरोंकीबाढ़-सी आगई।किन्तुयदि एक शास्त्र मिल जाय तो ईश्वर-पथ में कोई मत-सम्प्रदाय चाह करके भी नहीं बनाया जा सकता। होताहीनहींतोकोईबनायेगाक्या? सांसारिक मोह से छूटकर उस परमात्मा के अंक में प्रवेश ही तो पाना है। कल्याणस्वरूप वह परमात्मा (आपकापिता)एक ही है, उसी कोपानाहैतो बहुत सेपंथकैसे ?उसकेपास पहुँचने का तरीका एक ही है- जो इन्द्रियाँ विषयोन्मुख दौड़ती थीं, उन्हें समेटकर इष्टोन्मुखकरना है।येकैसेसंयतकीजायँ?- इसी विधि-विशेष का नाम योग है। इतनी सी साधना समझना है। यही भजन है, इसी का नाम यज्ञ हैऔरइसीकोआचरणमेंढालना कर्महै। धर्मकायहसरल,निर्विवाद,क्रमबद्ध, पूर्णऔर सार्वभौम स्वरूप केवल एकशास्त्रमें हैऔरवहशास्त्रहैगीता।

कल्प के आदि करोड़ों वर्ष पूर्व और आजभीआपकाधर्मशास्त्रयोगेश्वरश्रीकृष्णके श्रीमुख से निकली हुई गीता है। सबसे पहले गीता थी, बाद में वेद उतरे। वेदों और उपनिषदों का भी मूल गीता है इसलिए गीता को धर्मशास्त्र के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का गुरुतर दायित्व आप सब पर है। वैसे तो 'हिन्दू'शब्दआपके किसीभी शास्त्र में नहीं है फिर भी अनेक संगठन इसनामसेबनेहैं।वे 'हिन्दू-हिन्दू'कहभर रहेहैं,किन्तु'हिन्दू'ाप क्या है?- इसे नहीं बता रहे हैं। इसी तरह सरकारधर्मनिरपेक्षताकाव्रतलेकरजनताके लिए सुखकर व्यवस्था देने के लिए यत्नशील है। जब धर्म एक ही है तो निरपेक्ष कैसा? निरपेक्षतातोतबहोतीजबएकसेअधिकदो-चार धर्म होते। यदि परमश्रेय की शोध का रास्ताछोड़करसरकारकेवलकृषि उगायेगी तो जनता एक सूत्र में कभी नहीं बँधसकती। समाज बिखरता चला जा रहा है और आप सबको पकड़-पकड़कर समृद्धि दे रहे हैं। यह कभी नहीं होगा, क्योंकि सबको एक सूत्र में बाँधने की कुंजी है धर्म और वही आपनहीं दे रहे हैं। यही कारण है कि आज 'हिन्दू' का मतलब है- भेड़िया धसान, जबकि सृष्टि में धर्मकाआदि-देशयहीहै।आपकाशास्त्रज्यों-का-त्योंसुरक्षित है,केवल समझनाहै।

यदि सुधीजन, राजनेतागण, हिन्दुओं केशुभचिन्तकअग्रजकेवलशास्त्रदे दें,शास्त्र केरूपमेंगीतादेदेंतोलोगधर्मकीपरिभाषा स्वयं पा जायेंगे। साठ-सत्तर करोड़ जनसमूह का उद्धार हो जायेगा। उन्हेंएकनिश्चितदिशा मिल जायेगी। उनके बिखराव का मूल कारण समाप्त हो जायेगा। इतना बड़ा जनसमूह आश्वस्त और सुखी हो जायेगा। घृणा समाप्त हो जायेगी। अलग-अलग सम्प्रदायों के द्वारा अलगाव की माँग होती रहती है, वह रुक जायेगी और जो भी इस कार्य को कर ले जायेंगे, वे युग-पुरुष कहलायेंगे। यह समाज हजारों वर्षों के लिए सुरक्षित हो जायेगा, अमरहोजायेगा।

अतः समाज प्रतिनिधि, राष्ट्र प्रतिनिधि एवं वरिष्ठ राजनेताओं का और हम सबका एकहीदायित्वहैकिइनदो-चारवर्षों में

इतना कार्य अवश्य कर लें। कल कभी आता ही नहीं।आजसे ही आरम्भ करें, दसदिनमें भूमिका खड़ी कर लें। संसद में इस प्रश्न को रखें, प्रश्नों की झड़ी लगा दें कि हमारा धर्मशास्त्र कौन-सा है? धर्म की एक तालिका माँग लें तो आप स्वयं देखेंगे कि गीता के अतिरिक्त धर्मशास्त्र के रूप में जन-साधारण को देने के लिएकिसी के भी पास अन्य कोई धर्मग्रन्थ नहीं है। आपके पूर्वजों ने बहुत बार इस धर्म और देश की रक्षा में सिर दिया था, अब तो सिर भी नहीं देना है- देना है केवल विचार औरकरना हैइनविचारोंकोजन-जन तक पहुँचानेकासत्प्रयास।

शास्त्र क्या है? धर्म क्या है? कम-से-कम शब्दों में उसकी परिभाषा कैसे हो? उसके आचरण में क्या-क्या आता है? आचरण कहाँ से आरम्भ करें? - इन सम्पूर्ण प्रश्नों के समाधान के लिए गीता पूर्ण पुस्तक है, जिसका मूल आशय 'यथार्थ गीता' नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही धर्म केनाम पर कुछ अवरोध लगे हैं, जैसे- गाय-धर्म, सती-धर्म, जाति-धर्म। पाँच-सात लघु पुस्तिकाओं द्वारा उनके निराकरण का भी प्रयासकियागयाहै, जिससेअवरोध समझमें आजायेंऔरउनपरविचारकरलियाजाय।

विचारणीय हैकिमुसलमानलोगअपने बच्चोंकोदस-बारहसालमें हाफिज बना देते हैं, कुरान कण्ठस्थ करा देते हैं। ईसाई भी दैनिक प्रार्थनाओं में पृष्ठ-पृष्ठ पढ़ा-पढ़ाकर बाइबिल कण्ठस्थ करा देते हैं, किन्तु हमारा दुर्भाग्य और हमारेधर्माचार्यों कीअदूरदर्शिता देखेंकिशास्त्रकोईपढ़नहींसकता।

एकप्रशस्तधर्मशास्त्र के स्थान पर हजारों वर्षों से रीति-रिवाज और रूढ़ियाँधर्मकेनामपरहमारेमस्तिष्कमेंभर दी गई हैं। स्मृतियों और कतिपय पुराणों ने स्वर्ग की वाटिका और नरक का दुर्दशापूर्ण जीवन दिखाकर जन-जन का हृदय और मनोबलदबादियाहै।इसकुप्रभावकोमिटाने के लिए जब तक सरकारी प्रचार-माध्यमों से दस-बीस मिनट का समय प्रतिदिन नहीं मिलेगा, अपेक्षित सुधार नहींहोगा।जिसदिन यह प्रसारण हृदय में प्रवाहित हुआ, जनता एक सूत्र में बँध जायेगी, घृणा समाप्त हो जायेगी, जो हिन्दूधर्म छोड़कर भाग रहे हैं वे खड़े हो जायेंगे। जो भाग गये हैं, वे लौट आयेंगे औरभारतअपनापूर्व-गौरवपुनःप्राप्त कर लेगा। प्रसारण के पूर्व विचार करके तो देखें।

हाँ, प्रसारण स्वयं न करें। गीता भगवान्‌योगेश्वर श्रीकृष्णकीवाणीहै। उन्होंने ही गीता में निर्णय दिया है कि शास्त्र कोई विरला अधिकारी ही जानता है और उनके निर्देशन में कोई विरला अधिकारी ही पढ़ता है। अतः यह प्रसारण किसी महापुरुष के निर्देशन में ही होना चाहिए। शैक्षिक योग्यता के ही बल पर गीता को समझा ही नहीं जा सकता; क्योंकि भाषाविद् 'कागज का लिखा' कहेंगे और महापुरुष 'आँखों की देखी हुई' बातें कहेंगे। अतः किसी महापुरुष से निर्देश लेतेरहनानितान्तआवश्यकहै।